ISSN: 2278-4632
Vol-14, Issue-12, No.05, December: 2024

राजपूताना में नारी की स्थिति का आलोचनात्मक अध्ययन– 1200 से 1600 ई0

सविता बिश्नोई (शोधर्थी)

डॉ. जितेन्द्र यादव (शोध निर्देशक) इतिहास विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविघलय, हनुमानगढ़

प्रस्तावना :–

सामाजिक संरचना के निरन्तर परिवर्तनशील विकास क्रम में सामाजिक इतिहास का विश्लेषण एक महत्वपूर्ण अध्ययन क्षेत्र है ऐतिहासिक विश्लेषण ही समाज की संरचनात्मक गतिशीलता, धनात्मक व ऋणात्मक पक्षों को प्रकाश में लाकर वर्तमान युग से उसकी उपादेयता का निर्धारण करता है। इतिहास का सामाजिकता से सम्बन्धित यह उपागम ही जन सामान्य के जीवन के लिए विषय की अधिकतम लाभदेयता का मापदण्ड है। सामाजिक इतिहास के महत्वपूर्ण पक्ष नारी के जीवन से संबधित विभिन्न पक्षों के विश्लेषण का सल्तनतकालीन राजपूताना के परिप्रेक्ष्य में करने का प्रयास शोध प्रबंध में किया गया है। इस विषय में महत्वपूर्ण तथ्य है कि प्राचीनकाल से ही राजपूताना को बाह्य आक्रमणों का सामना करना पड़ा। महाजनपदकाल में शिवि, मालव, आर्जुनायन व यौधेय जैसी युद्धप्रिय जातियां यहाँ निवास करती थी। राजपूताना को मौर्यकाल के पश्चात् कुषाण व शक आदि विदेशी आक्रमणकारियों व शासकों के अधीन रहना पड़ा। गुप्तों के पतन के पश्चात हूण आक्रमणकारी राजपूताना व मालवा में ही आकर बसे। यहां तक कि राजपूताना की प्रधान जाति राजपूतों के भी स्वदेशी या विदेशी उत्पति का निर्णय होना अभी शेष है।

भारतीय इतिहास में नारी के सम्बन्ध में यत्र–तत्र वर्णन प्राप्त होता है। किन्तु साक्ष्य के रूप मेंविशिष्ट स्त्रोतों के सम्बंध में जानकारी का अभाव है। जिसका प्रमुख कारण विश्व के अन्य देशों की भाँतिभारतीय समाज का भी पुरूष प्रधान होना है। जो नारियों को विशेष महत्व प्रदान नहीं करता। किन्तु यहभी ध्यातव्य है कि, एक स्वस्थ समाज के निर्माण में नारियों ने अपनी महती भूमिका का सफलतापूर्वकनिर्वहन किया है। नारियों के त्याग, बलिदान, साहस, प्रयास और ज्ञान के कारण यह माना जा सकता हैकि, समाज की वस्तुस्थिति और स्तर की जानकारी, समाज में रहने वाली नारियों की स्थिति से समझीव जानी जा सकती है।

राजपूत काल में विदेशी मुसलमान आक्रान्ताओं ने भारत पर अपने सफल धावे मारने शुरू करदिए थे। उनके ये आक्रमण मुख्यतः धन प्राप्ति के उद्देश्य से किए गए किन्तु कालान्तर में इस्लाम धर्मका प्रचार प्रसार करना भी उनके आक्रमणों का दूसरा प्रमुख कारण बन गया। इनमें गजनी के तुर्कआक्रमणकारी महमूद गजनवी के भारत पर अठारह आक्रमण विशेष उल्लेखनीय है। चौहान नरेशपृथ्वीराज तृतीय के समय में तुर्क आक्रमणकारी मुहम्मद गौरी के आक्रमण धन प्राप्ति व इस्लाम धर्म केप्रचार प्रसार के साथ साथ राज्य विस्तार की नीति तक पहुंच गया।

तुर्को द्वारा दिल्ली सल्तनत की स्थापना के साथ ही राजपूत शासकों के साथ उनके संघर्ष होनेलगे। जिसका समाज पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। जिसमें राजपूत नारियां सर्वाधिक प्रभावित हुई।राजपूताना की बहुसंख्यक हिन्दू जनता में नारी की स्थिति प्राचीन समय से ही निश्चित सामाजिकबंधनों से आबद्ध रही। गुप्तकाल के पश्चात् तो कन्या वध, बालविवाह, सती प्रथा, विधवा विवाह निषेधजैसी निरंकुश बाध्यता का भी उन्हे सामना करना पड़ा। सातवीं शताब्दी से भारत में मुसलमानों का प्रवेशहोने लगा था और इसके बाद तो नारियों पर ओर भी अधिक अंकुश लगने लगा। बारहवीं शताब्दी केअन्तिम दशक में विदेशी तुर्क मुसलमानों द्वारा भारत में सत्ता स्थापना के बाद तो विशेष रूप सेराजपूताना का सामाजिक जीवन तो अत्यधिक प्रभावित हुआ। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में राजपूताना की सामाजिक स्थिति का नारी के विशेष सन्दर्भ में अध्ययन किया गया है।

शोध अध्ययन का महत्व :

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के माध्यम से 1200 से 1600 ई0 तक राजपूताना में नारी की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं राजनीतिक स्थिति में किस प्रकार के परिवर्तन हुए। नारी की स्थिति में किस प्रकार का सुधार

Copyright @ 2024 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-14, Issue-12, No.05, December: 2024

हुआ इस विषय पर कार्य किया जायेगा, किन्तु इन सुधारों में मुख्य रूप से कुछ ही समाज सुधारकों के विशेष योगदान के बारे में इतिहास लेखन किया गया है जबकि इन सामाजिक सांस्कृतिक, धार्मिक एवं राजनीतिक सुधारों में इन लोगों के अलावा अनेक महापुरूषों का योगदान भी रहा है। मैं अपने शोध अध्ययन में उन महापुरूषों के योगदान को लेते हुए उस कमी को दूर करने का प्रयास करूंगी। प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध के माध्यम से राजपूताना में नारी की स्थिति का अध्ययन व विश्लेषण किया जायेगा तथा पता लगाया जायेगा की नारी की स्थिति में क्या सुधार हुए इन सुधारों के बाद राजपूताना में परिवर्तन की जो लहर चली, उसका भी विस्तृत वर्णन किया जायेगा, जो एक महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराती है। भविष्य में इस विषय पर यदि कोई विद्यार्थी शोध कार्य करता है तो उसे मेरे शोध प्रबन्ध से अवश्य ही सहायता मिल सकेगी।

शोध की समस्या :–

भारतवर्ष में प्राचीनकाल से ही नारी की स्थिति भिन्न–भिन्न रही है। भारत के विशिष्ट प्रान्त राजपूताना में तो नारियों की स्थिति काल की गति के साथ अवनति की ओर ही बढ़ी है। किन्तु इतिहास साक्षी है कि यद्यपि विश्व के अन्य देशों की ही भांति भारतवर्ष और इसके प्रान्त राजपूताना के पुरूष प्रधान समाज में नारियों को विशेष महत्व नहीं दिया गया तथापि यहां की नारियों ने अपने त्याग, बलिदान, साहस, प्रयास और ज्ञान के कारण न केवल भारत बल्कि विश्व इतिहास के उज्ज्वलतम पृष्ठों पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है।

इतिहास अतीत का दर्पण होता है। प्रस्तावित शोध प्रबन्ध में राजपूताना की नारियों द्वारा विषम परिस्थितियों में भी अनेक प्रकार से अपना योगदान देने अथवा विशिष्ट भूमिका निभाने वाली नारियों के सम्बन्ध में जानकारी देने का प्रयास किया जा रहा है।

शोध के उद्देश्य :–

प्रत्येक विशिष्ट कार्य कुछ निश्चितउद्देश्यों पर आधारित होता है। निश्चितउद्देश्य ही कार्य को एक सुनिश्चित दिशा प्रदान करते हैं। प्रस्तावित शोध प्रबन्ध तक राजपूताना में नारी की स्थिति का आलोचनात्मक अध्ययन– 1200 से 1600 ई0 निम्नलिखित उद्देश्यों से अभिप्रेरित है :–

1. राजपूताना के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में नारियों की भूमिका का अध्ययन करना।
2. मध्यकालीन राजपूताना (आलोच्यकाल 1200 से 1600 ई0) की सांस्कृतिक स्थिति का अवलोकन करना।
3. मध्यकालीन राजपूताना (1200 से 1600 ई0) में राजपूताना की नारियों के चरित्र, त्याग, बलिदान आदि उच्चआदर्शो का तत्कालीन परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करते हुए तुर्क–राजपूत संघर्षो में राजपूताना की नारियों की भूमिका व योगदान का अध्ययन करना।
4. राजपूताना की सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व राजनैतिक दशा में आलोच्यकालीन नारियों के कार्यो परप्रकाश डालना।
5. आक्रमणकारी तुर्को का राजपूताना की नारियों के प्रति दृष्टिकोण व व्यवहार का आलोचनात्मक अध्ययनकरना।

शोध की परिकल्पनाएं :–

1. राजपूताना में नारियों केप्रति दृष्टिकोण व व्यवहार अच्छा था।
2. मध्यकालीन राजपूताना (आलोच्यकाल 1200 से 1600 ई0) में नारी की सामाजिक स्थिति अच्छी थी।
3. मध्यकालीन राजपूताना (आलोच्यकाल 1200 से 1600 ई0) में नारी की धार्मिक स्थिति अच्छी थी।
4. मध्यकालीन राजपूताना (आलोच्यकाल 1200 से 1600 ई0) में नारी की सांस्कृतिक स्थिति अच्छी थी।
5. मध्यकालीन राजपूताना (आलोच्यकाल 1200 से 1600 ई0) में नारी की राजनीतिक स्थिति अच्छी थी।

Copyright @ 2024 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-14, Issue-12, No.05, December: 2024

शोध की विधि :–

प्रस्तावित शोध प्रबन्ध में मुख्यतः मध्यकालीन राजपूताना से सम्बंधित सामयिक ऐतिहासिक ग्रन्थों, संस्कृत साहित्य, राजपूताना साहित्य, जैन व बौद्ध साहित्य, वर्तमानकालीन प्रकाशित ऐतिहासिक साहित्य के साथ साथ विभिन्न शोध पत्र पत्रिकाओं, जर्नल्स व राजकीय गजेटियर आदि के विषद् अध्ययन द्वारा प्रस्तावित शोध प्रबन्ध को पूर्ण किया जा रहा है। स्त्रोतों के माध्यम से अध्ययन सामग्री का संकलन किया जा रहा है।

शोध की सीमाएं :–

किसी भी कार्य की पूर्णता उसकी निश्चित कार्य योजना पर अवलम्बित होती है। बिना निश्चित कार्य योजना के कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता है। जिसमें उस कार्य की सीमाबद्धता भी बड़ी महत्वपूर्ण कड़ी है। प्रस्तावित शोध प्रबन्ध तक **राजपूताना में नारी की स्थिति का आलोचनात्मक अध्ययन–1200 से 1600 ई0** में वर्तमानकालीन राजपूताना राज्य की नारियों की विभिन्न स्थितियों, इतिहास में उनकी भूमिका व योगदानों का आलोचनात्मक अध्ययन किया जा रहा है। किन्तु यथाप्रसंग आलोच्यकाल व भौगोलिक क्षेत्र की तुलनात्मक समीक्षा के क्रम में प्राचीन काल व आधुनिक काल की नारियों के जीवन की भी विभिन्न दशाओं का वर्णन किया जा रहा है। इसी प्रकार राजपूताना राज्य के अन्य पड़ौसी राज्यों से सम्बन्धित राष्ट्रीय इतिहास को प्रभावित करने वाली विभिन्न स्थितियों का भी अध्ययन किया गया है।

शोध का क्षेत्र :–

प्रस्तावित शोध प्रबन्ध में भारत के एक विशिष्ट प्रान्त राजपूताना की नारियों की विभिन्न भूमिकाओं व योगदानों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया जाएगा। ध्यातव्य है कि एकीकरण से पूर्व राजपूताना में प्रायः सभी राजपूत रियासते होने के कारण इस विशिष्ट भौगोलिक व सांस्कृतिक क्षेत्र को राजपूताना के नाम से जाना जाता था।

प्रस्तावित शोध प्रबन्ध में राजपूताना के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों की नारियों के सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, कला व साहित्यिक आदि तथ्यों का विस्तृत अध्ययन किया जा रहा है।

मुख्य शोध निष्कर्ष :–

सम्राट हर्षवर्द्धन की मृत्यु के पष्चात् उत्तर भारत में राजनैतिक विकेन्द्रीकरण की स्थिति उत्पन्न हो गई। जिसके फलस्वरूप स्थानीय सामन्तों ने अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा करते हुए छोटे–छोटे राज्यों के रूप में अपने राजवंशों की स्थापना की। कालान्तर में ये स्वयं को 'राजपुत्र' अर्थात् राजपूत कहने लगे और विदेशी मुसलमानों के भारत आगमन से पूर्व तक इनका शासनकाल 'राजपूत कालीन समाज एवं संस्कृति भारतीय इतिहास में एक विशिष्ट मोड़ बिन्दु सिद्ध हुआ। इस काल से नारी की स्थिति में भी विशेष परिवर्तन दिखाई देता है। राजपूतकालीन समाज में नारियों को सम्मानित स्थान प्राप्त था। राजपूत शासक अपनी रानियों से प्रेम करते थे तथा उनके सम्मान, मान मर्यादा एवं सतीत्व की रक्षार्थ अपना सर्वस्व न्योछावर करने हेतु उद्यत रहते थे। राजपूत काल में बाल विवाह सामान्य प्रचलन में आ गया। बहुविवाह इस काल की एक सामान्य प्रथा बन गई। राजपूतों एवं वैष्यों में इसका अधिक प्रचलन था, चूंकि दोनो ही वर्ग धनिक थे। तत्कालीन समाज सती प्रथा से दूषित था। इस प्रथा के अनुसार पति के मरणोपरान्त उसकी पत्नी या पत्नियां उसकी मृत् देह या अवशेष के साथ अग्नि में जल कर सती हो जाती थी । कभी कभी तो पुरूष की प्रतिष्ठा उसके शव के साथ जलने वाली पत्नी या पत्नियों से ही आंकी जाती थी। अतः प्रत्येक राजा की मृत् देह के साथ उसकी रानियां, उपरानियां, खवासने, पासवानें और दासियां सती होती थी। वरना उस पर इतने कठोर प्रतिबन्ध लगा दिए जाते थे कि उसका जीवन पूर्णतः नारकीय बन जाता था।

निष्कर्ष रूपेण यहा कहा जा सकता है कि विवेच्ययुगीन नारी जीवन में अनेक सकारात्मक प्रवृत्तियाँ व नकारात्मक प्रवृत्तियाँ एक साथ विद्यमान थीं। तत्कालीन नारी की स्थिति का विश्लेषण एक जटिल प्रकार है,

Copyright @ 2024 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-14, Issue-12, No.05, December: 2024

जिसमें दोनों पक्षों का समालोचनात्मक विवेचन कर ही किसी निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है निर्णय पर पहुंचने की शीघ्रता की अपेक्षा नारी–जीवन के सभी संबद्ध पक्षों का यथार्थ रूप से प्रस्तुतीकरण ही प्रस्तुत शोध कार्य का विनम्र प्रयास है इस प्रयास के अंतर्गत स्त्रियों के अधिकार, दायित्व, नियंत्रण उनके द्वारा उपभोग की जा रही स्वतंत्रता, नारी जीवन से संबंधित सांस्कृतिक पक्षों का प्रकाशन तथा सम्बद्ध नकारात्मक प्रवृत्तियाँ आदि का तुलनात्मक कालक्रमबद्ध व संतुलित विश्लेषण किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची : –

1. डॉ. सिंह, मनोहर राघवेन्द्र : राजस्थान के राजघरानों का सांस्कृतिक अध्ययन, जयपुर, 1991
2. टाड, कर्नल जेम्स : राजस्थान का इतिहास, आदर्श हिन्दी पुस्तकालय, इलाहबाद, 1992
3. गुप्ता, बैनी : राजस्थान का इतिहास, बोहरा प्रकाशन, जयपुर, 1998
4. चन्द्रावती, लखन पाल : राजपूताना में स्त्रियों की स्थिति, 1999
5. वोल्सटन, मैरी क्राफ्टय : स्त्री अधिकारों का औचित्य साधन, 2003
6. जैन, अरविंद मंडलोई, लीलाधर : स्त्री मुक्ति का सपना, 2004
7. गुप्ता, सरोज कुमार : भारतीय नारी कल आज और कल, प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, 2012
8. अम्बेडकर, बी.आर. : अनुवादक शीलप्रिय बौद्ध, हिन्दू नारी का उत्थान और पतन, सम्यक प्रकाशन, 2013
9. मिल, जॉन स्टुअर्ट व प्रगति सक्सेना (अनु0) : स्त्रियों की पराधीनता, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली, 2016
10. विवेकानन्द स्वामी, आर्य इन्द्रदेवसिंह (अनु0) : भारतीय नारी, रामकृष्ण मठ, नागपुर, 2017
11. सिंह, वी.एन. व सिंह, जन्मेजय : नारीवाद रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2018
12. चमड़िया, सपना : स्त्री और धर्म, स्त्री की दुनिया, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2019

Copyright @ 2024 Author